

गजल: बाकी है सफर ...!

मंजिल दूर, बाकी है सफर,
ये देखों थकावट का असर।
ना चुराना मेहनत से नजर,
चाहे दिखा रहे समय गजर।
ऐसे ही करना जीवन बसर,
न रखना कोई बाकी कसर।

मंजिल दूर, बाकी है सफर,
ये देखों थकावट का असर।
ये जिन्दगी मिली है मयस्सर,
अब इसे नहीं रखना सिफर।
निराश में ना जाना बिखर,
कहीं तो लिखा होगा शिखर।

मंजिल दूर, बाकी है सफर,
ये देखों थकावट का असर।
नजरें हो चार, समझे यार,
मिला साथी बना हमसफर।
चलने दें, जीवन इस कदर,
आया आनंद कितना सुंदर।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

आ ज आप फिर कहेंगे कि मै घूम-फिरकर शेरों करूँ तो करूँ क्या ? मै डोनाल्ड ट्रम्प से चीन के राष्ट्रपति शी जिन पिंग की तरह पांग ले नहीं सकत। नहीं कह सकता की ! टैरिफ वार हो या असली वार हम अंत तक लड़ने को तैयार हैं। शी जिन पिंग ने जो कहा यदि यही बात हमारे विश्वगुरु कहते तो मै उन्हें धी-शक्कर खिलाता, लेकिन उन्होंने तो कुछ कहने के बजाय बनतारा जाना पसंद किया। ये उनका निजी मामला है इसलिए मैं कुछ कहना नहीं चाहता। आजकल राजनीति में इतिहास के छाव तलाशे जा रहे हैं। पहले डोनाल्ड ट्रम्प से टकराने वाले युक्तेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की मुझे जारीनी के छाव लोंगे लेकिन अब इस फेहरित में चीन के राष्ट्रपति शी जिन पिंग का नाम भी जुड़ गया है।

मामला राष्ट्रीय होकर भी अंतर्राष्ट्रीय हो गया है। हमारे छाव आजकल ट्रम्प से खिलाने का साहस जुटाने या दिखने के बजाय अपने गुहराज्जु गुजरात में बनतारा के प्रवास पर हैं। सिंहों की तर्कीरें उतार रहे हैं, सिंह शावकों यानि छावाओं को बोतल से दूध पिला रहे हैं। उनका दिल करुणा से सराबोर है। वे किसानों से ज्यादा वन्य प्राणियों का ख्याल रखते हैं, इसलिए मैं उनका हृदयतल से सम्मान करता हूँ। लेकिन ट्रम्प के समाने मुझे अपने नेता का भीगी बिल्ली बनना बिल्कुल रास नहीं आता। अपको आता है तो मुझे कुछ नहीं कहना, किन्तु मैं तो अपनी बात कर रहा हूँ। मेरी बात सबके मन की बात हो ये जरूरी नहीं। मन की बात, मन की होती है जन-जन के मन की नहीं होती, ये हम अपनी बात के 100 से ज्यादा एपिसोड देखकर जान गए हैं।

अपको पता है कि इस समय अमेरिका के नए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प साहब ने सहित युद्ध के बजाय दुनिया को टैरिफ युद्ध की सौगात दी है। ट्रम्प ने कनाडा और



मैनिस्सको के साथ ही चीन पर ही नहीं हमारे भारत पर भी अतिरिक्त टैरिफ लगाया है। अमेरिका के इस कदम से चीन आगबबूला हो गया है। लेकिन हमने अपने आपको आग-बबूला नहीं होने दिया। इधर जैसे ही अमेरिका ने चीन से नियात होने वाले माल पर टैरिफ लगाने का ऐलान किया, उधर बीजिंग की तरफ से भी जागी बारबावी की गई। चीन भी अब अमेरिका से आपने वाले होने वाले समान पर 10 से 15 फीसद तक का टैरिफ लगाने जा रहा है। इससे अब दुनिया की दो महाशक्तियों के बीच ऐलान -ऐ-ट्रेड वॉर शुरू हो गया है। चीन ने ट्रॉप सरकार को खुले तौर पर पुरुद्ध की भी धमाकी दे डाली है। चीन का बाबा कहना है कि अगर अमेरिका युद्ध छावता है (चाहे वह टैरिफ युद्ध हो, व्यापार युद्ध हो या कोई और युद्ध) तो हम अंत तक लड़ने के लिए तैयार हैं।

दरअसल भारत और चीन में यही फर्क है। चीन का राष्ट्रवाद भारत और अमेरिका के राष्ट्रवाद से अलग है। हम संकर के समय में बनतारा में मन की शांति तलाश करते हैं लेकिन चीन मोर्चावर्दी करता है। हम या तो झाला झलने में सिद्धहस्त हैं या सिंह शावकों को दृढ़ पिलाने में। हमें आँखें तरेना आता ही नहीं। हम आँखें तरेरते भी हैं तो ले देकर नेहरू, इंदिरा, राजीव और गाहुल गाँधी पर। क्योंकि हमें पता है कि हम ट्रम्प साहब होंगा या शी जिन पिंग साहब को आँखें नहीं दिया सकते। । उनसे आँखें नहीं मिला सकते, भले ही दोनों हमें आँखें दिखाएँ, हमारा बांध मरोड़े या हमारी जीमीन पर कज्जा कर लें। अपने आपसे ही पांगा लेकर हलाकान हैं।

हमारी आबादी चीन से ज्यादा है। हम चीन से बड़ा बाजार हैं। अमेरिका की अर्थव्यवस्था का मेरुदंड हम भारतीय हैं। पिंग भी हम शतुर्मुर्ग बने खड़े हैं। आप सवाल कर सकते हैं कि हमने आपको देश का नियोगिता करते हैं, चौकीदार करते हैं या सेवक करते हैं इसलिए नहीं चुना कि आप देखे के स्वायत्तान की रक्षा करने के बजाय मेरों के साथ, सिंह शावकों के साथ या गाय-बछड़ों के साथ फोटो खिंचावने में व्यस्त रहे। आपको जेलेंस्की और शी जिन पिंग की तरह काम करना चाहिए था।

जो काम हमारे आज के नेता कर रहे हैं वो तो आज के नेताओं की आँख की रिकार्डीरी रहे नेहरू, गाँधी भी कर चुके हैं। इसलिए आपको ऐसा करने से रोका जाना पूर्वाग्रह माना जाएगा, इसलिए अपा शक से सिंह शावकों को बोतल से दूध पिलाइँ, लेकिन देख लैजिये कि देश की अर्थ व्यवस्था भी अब धोर कुपोषण का शिकार है। शेर, बाजार, और ये मुँह पड़ा हुआ है। इन्हें भी दूध से बोतल पिलाये जाने की जरूरत है अन्यथा ये दोनों ही दम तोड़ देंगे। जो बात मैं अपने आज के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता के लिए कह रहा हूँ हूँ वो ही बार्थार्श कि वे सत्ता प्रतिष्ठान में होते। वे तो विषय में हैं। वे तो बिखरे हुए हैं। असहाय हैं। अमेरिका से पांगा नहीं ले सकते। वे तो आपसे ही पांगा लेकर हलाकान हैं।

बहहाल चूंकि हमारे राष्ट्र नायक ने बनतारा का प्रमोशन किया है तो मैं भी निकट भविष्य में बनतारा जाकर कुछ बिहान बिताऊंगा। अनंत अम्बानी साहब को भी बधाई दूँगा। लेकिन अभी तो मेरी नींद उड़ी हुई है। सपने की बापी ट्रम्प साहब आते हैं तो कभी जेलेंस्की। अब तो यी जिन पिंग साहब भी अनेंगे हैं। कल रात ही मेरे सपने में मोदी जी अपने सिंह शावकों को दूध पिलाते नजर आये।

@ राकेश अचल

क्या एक लड़की होना पाप है? क्यों हमें स्वर्गानन नहीं मिलता....



जेबा खान

आखिर हम इस समाज में कब तक अवधिलालों को दबाते रहेंगे कभी घर-परवान के नाम पर तो कभी पिता का मान-समान बचाने के लिए हमें एक बेटी, महिला और पत्नी को अपना मन मसूसकर कब तक रहाना पड़ेगा। क्या इस पुरुषप्रधान देश में केवल एक दिन महिला दिवस मना लेने से उनकी बद

कर रख दी हैं अगर बात आज के समय की तरह तो एक 70 वर्ष की बुजुर्ग महिला हो या 1 साल की मासूम सी काली उसके अपने रिश्तेदार अपने घर में बलाकार कर देते हैं।

आखिर महिलाओं को पुरुष इन्सान होने का भी हक नहीं दे सकते और साल में एक बार महिला दिवस मना कर सोच लेते हैं कि देश की महिलाओं को उनका हक, इजित, प्रेम सब कुछ उनको मिल गया। जिस भगवान् अल्लाह ने माँ के कदमों में जनत रख दिए आज उसी माँ-बहन को पुरुष अपने पैरों तले रोटे के चले जाते हैं। उन्हें इजित के नाम पर दी जाती है चंद योजनाओं का लोलीपोप जैसे :- बेटी बच्चाओं, बेटी पढ़ाओं योजना। सुख्या समृद्धि योजना। महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण देने से आर्थिक रूप से मजबूत होना। महिला

समान बचत पत्र योजना के जरिए 2 लाख रुपए तक निवेश पर 7.5 फीसदी व्याज मिलना। ग्रामीण महिलाओं के लिए महिला शक्ति केंद्र स्कीम लाना। मातृत्व दिवस अवकाश 12 की जगह 26 हफ्ते करना। प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना के तहत गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को बच्चे के जन्म पर 5000 रुपए देना। मुस्लिम महिलाओं के लिए तीन तलाक पर कानूनी पारंपरी। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त एलाइंजी कलनेक्शन और सिलेंडर देना। महिला ई-हाट स्कीम शुरू करना। महिलाओं के लिए कई स्टार्टअप स्कीम। महिला पोषण अधियान। महिला हेल्पलाइन योजना। सुक्षित मातृत्व आश्वासन सुमन योजना। प्री लिंसलाइ मरीजों ने महिलाओं को उनका हक और समान मिल सकता है।

योजना के तहत 5 लाख रुपए तक प्री में इलाज। बिंकिंग बुमें हाँस्ल रस्कीम चालू करना। बन स्टॉप सेंटर स्कीम, जिसके तहत हस्त से पीड़ित महिलाओं को सभी तरह की मदद एक ही छत के नीचे मिलना। मातृत्व वंदन योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को पोषिक आहार योजना आदि क्या सिफर इन योजनाओं से महिलाओं को उनका हक और समान मिल सकता है।

क्या वो उन मान समान की हककार नहीं हैं जो उन्हें ऊर वाले ने (ईश्वर/ अल्लाह) ने उन्हें दिया है। क्या वो उस मान समान की हककार नहीं जो एक पुरुष को परिवार से मिलता है। या इनको सुरक्षा के लिए कड़े कानून बनाने के जरूरत नहीं है जिससे बलाकार से महिला और मासूम बच्चों को बचाया जा सके।

बसंती बियार झूम रही है

बसंती बियार
झूम रही है

डाली डाली

हुई मतवाली

सुंदर आभामंडल

लेकर बिहारे पुष्पदल

खुशबू तैरे

भीनी-भीनी बहुतेरे

आई है अंगड़ाई

अ

मुंबई के अंधेरी में एक ही ऑफिस कई लोगों को किया पट देने का नामला सागरने आया

दैनिक समाज जागरण

मुंबई (गिरजा शंकर अग्रवाल) - अंधेरी पश्चिम में एक मामला सामने आया कि संजीव सिंह उर्फ बाबी नाम के व्यक्ति ने मौर्य एस्टेट बिल्डिंग में एक ऑफिस किया एवं पर लिया और फिर उस ऑफिस को कई लोगों को रेट पर दे दिया। जिस एडेस पर कई कंपनियां रिजिस्टर की गई हैं। इस पूरे प्रकरण में रियल एस्टेट एजेंट का भी अहम रोल हो सकता है। बिना रियल एस्टेट की जानकारी के इन्हें बड़े खेल को अंजाम नहीं दिया जा सकता है। संजीव सिंह उर्फ बाबी ने ऑफिस लेकर कई लोगों को ऑफिस कैसे दिया



क्या फर्जी एसीमेंट बनाया गया। अगर कंपनियां रिजिस्टर हुई हैं और बैंक अकाउंट खोले गए हैं तो एसीमेंट भी बना गया। और अगर एसीमेंट बना गया तो रियल एस्टेट एजेंट भी इसमें शामिल

होगा। इन मामलों को लेकर कंपनी नेता सुरजीत सिंह ने अंबेली फोलिस स्टेशन में संजीव सिंह उर्फ बाबी के नाम शिकायत दर्ज करवाई है। फोलिस इस मामले की जांच कर रही है।

दिल्ली पब्लिक स्कूल: कुल वार्षिक शुल्क का 60% अग्रिम अवैध शुल्क वसूली पट दिल्ली पेटेंट्स एसोसिएशन ने जातीय आपति

दैनिक समाज जागरण

दिल्ली पेटेंट्स एसोसिएशन (डीपीएस) द्वारा शिकायतकर्ता अभिभावक महेश मिश्र की मिली शिकायत पर कार्यवाही करते हुए दिल्ली शिक्षा मंत्री आशीष सूद व केंद्रीय बाल आयोग चेयरपर्सन सुनी तृप्ति गुरहो को पत्र लिखकर, दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस), द्वारका द्वारा नसरी औंप्रा-प्राइमरी कक्षाओं में प्रवेश के लिए अभिभावकों से कुल वार्षिक शुल्क का 60% अग्रिम में वसूलने की प्रथा पर गंभीर अपति जताई है। यह प्रथा दिल्ली स्कूल शिक्षा अधिनियम और नियम (डीएस-ईएआर), 1973 के नियम 165 और 166 का उल्लंघन करती है।

शिकायतकर्ता अभिभावक महेश मिश्र जो कि एक विद्यार्थी समाजसेवी भी है ने बताया कि डीपीएस द्वारा, डीपीएस सोसाइटी द्वारा संचालित स्कूल है जो कि पिछो कई वर्षों से विभिन्न विवादित मुद्दों के बजाय से अभिभावकों एवं मीडिया में चर्चा का विषय है जैसे मनमानी फैसल वृद्धि, पीटी एवं मानमाने तोरों से गठन करना, मासूम बच्चों को एकांकी में बैठाना, प्रशासन द्वारा अनुमोदित शुल्क देने के बावजूद मासूम बच्चों के नामों को पब्लिक डोमेन में डिप्लोमे करना, नाम काटना इत्यादि जिसका शिकायत बहुत अभिभावकों द्वारा की जा रही है साथ ही नेशनल मीडिया में भी इसका उल्लेख समय समय पर होता रहा लेकिन न तो शो प्रशासन ने कोई कार्रवाई की जिससे स्कूल के हासिले तुलने बुलंद हो गया कि अब उनमें सहित जाते हैं। नियम कानून बना लिए जिसका ज्वलंत उदाहरण नसरी व प्री प्राइमरी में दिखायी के द्वारा एकमुक्त फैसले लेना साथ ही अवैधिनिक वचनबद्धता लेना की ओर अपने स्कूल द्वारा निर्धारित नियमों का समय समय पर पालन नहीं की तो अपने बच्चे को एडिसन स्कूल रोक दिया जाता है। इसको न मानने पर मेरे बच्चे को एडिसन स्कूल रोक दिया जाता है। डीपीएस की मार्ग:

1. बच्चों का प्रेषण सुनिश्चित करना: कानूनी शुल्क लेकर शिकायतकर्ता महेश मिश्र के बच्चे का प्री-प्राइमरी में प्रवेश की विषयता किया जाए, क्योंकि वहाँ बच्चे के अभिभावकों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा कि जबलपुर एवं महाकौशल क्षेत्र में व्यापार के उन्नति के अधिक से अधिक से अधिक तुलनात्मक है,

बस शहर के विवरियों को हिम्मत करके अपने बच्चे को जलारत है मध्य प्रदेश में हुई इन्वेस्टर मीट में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा उद्योगपतियों को उद्योग लगाने के लिए जो सर्व सुविधा दी जा रही है वह अन्य प्रदेशों की तुलने में सर्वाधिक है, इस मौके पर उपस्थिति में उपस्थिति के विवरण एवं जैविक कैलैश गुरुता ने कहा की सभी व्यापारियों को एक जुट होकर व्यापार में किसी भी तरीके की आ रही परेशानी को हाल करना होगा,

जबलपुर के अध्यक्ष एवं होटल व्यवसाय उद्योगपति अजय ग्रोवर ने बताया कि जबलपुर एवं जैविक कैलैश गुरुता ने जो अन्य देशों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है तो वह अच्छा है। जबलपुर के अध्यक्ष एवं होटल व्यवसाय उद्योगपति अजय ग्रोवर ने

2. डीपीएस-ईएआर के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है। जबलपुर के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

3. असर्वेधिनिक वचनबद्धता: स्कूल प्रबंधन अभिभावकों एवं मीडिया में चर्चा का विषय है जैसे मनमानी फैसल वृद्धि, पीटी एवं मानमाने तोरों से गठन करना, मासूम बच्चों को एकांकी में बैठाना, प्रशासन द्वारा अनुमोदित शुल्क देने के बावजूद मासूम बच्चों के नामों को डीपीएस द्वारा निर्धारित नियमों का समय समय पर पालन नहीं की तो अपने बच्चे को एडिसन स्कूल में भी ऊपर अपने ही नियम कानून बना लिए जिसका ज्वलंत उदाहरण नसरी व प्री प्राइमरी में दिखायी के द्वारा एकमुक्त फैसले लेना होता है। इसमें संजीव सिंह ने जबलपुर के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

4. अपार्टीमेंट के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है। जबलपुर के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

5. असर्वेधिनिक वचनबद्धता: स्कूल प्रबंधन अभिभावकों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है। जबलपुर के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

6. वचनबद्धता रद्द करना: स्कूल द्वारा अभिभावकों से ली जा रही असर्वेधिनिक वचनबद्धता को तुरत रद्द किया जाए।

डीपीएस की मार्ग:

1. बच्चों का प्रेषण सुनिश्चित करना: कानूनी शुल्क लेकर शिकायतकर्ता महेश मिश्र के बच्चे का प्री-प्राइमरी में प्रवेश की विषयता किया जाए, क्योंकि वहाँ बच्चे के अभिभावकों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

2. डीपीएस-ईएआर के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

3. अपार्टीमेंट के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

4. अपार्टीमेंट के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

5. असर्वेधिनिक वचनबद्धता: स्कूल प्रबंधन अभिभावकों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

6. वचनबद्धता रद्द करना: स्कूल द्वारा अभिभावकों से ली जा रही असर्वेधिनिक वचनबद्धता को तुरत रद्द किया जाए।

डीपीएस ने शिक्षा मंत्री, डीपीएस द्वारा निर्धारित नियमों का समय समय पर पालन नहीं की तो अपने बच्चे को एडिसन स्कूल में भी ऊपर अपने ही नियम कानून बना लिए जिसका ज्वलंत उदाहरण नसरी व प्री प्राइमरी में दिखायी के द्वारा एकमुक्त फैसले लेना होता है। इसमें संजीव सिंह ने जबलपुर के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

7. अपार्टीमेंट के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

8. असर्वेधिनिक वचनबद्धता: स्कूल प्रबंधन अभिभावकों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

9. अपार्टीमेंट के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

10. असर्वेधिनिक वचनबद्धता: स्कूल प्रबंधन अभिभावकों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

11. अपार्टीमेंट के तहत कार्यवाही: बच्चों के अधिकारों के हाथों के बच्चों के साथ वातालाप कर कहा है।

पुष्टि क्या है ?

धृति में तन जलाकर

काम करने का नाम है पुष्टि। चिलचिलाती धूप में रिक्षा खींचने का नाम है पुष्टि। खुदसे अधिक भार ढोने का नाम है पुष्टि। अपनी पहली तनखाव माता पिता के हाथों में रखने का नाम है पुष्टि। अपने शैक्ष कूलकर पक्की के लिए उपहार ले जाने का नाम है पुष्टि। अपनी जेब काटकर बिट्ठिया को गुड़िया दिलाने का नाम है पुष्टि। इसका विवरण आवश्यक है। इसका विवरण आवश्यक है। इसका विवरण आवश्यक है।

कलमकार की कलम में विवरण प्रकाश मिश्र

यहाँ में तन जलाकर काम करने का नाम है पुष्टि। चिलचिलाती धूप में रिक्षा खींचने का नाम है पुष्टि। खुदसे अधिक भार ढोने का नाम है पुष्टि। अपनी पहली तनखाव माता पिता के हाथों में रखने का नाम है पुष्टि। अपने शैक्ष कूलकर पक्की के लिए उपहार ले जाने का नाम है पुष्टि। अपनी जेब काटकर बिट्ठिया को गुड़िया दिलाने का नाम है पुष्टि। इसका विवरण आवश्यक है। इसका विवरण आवश्यक है। इसका विवरण आवश्यक है।

यहाँ में तन जलाकर काम करने का

